|| शिव चालीसा ||

|| ॐ श्री गणेशाय नमः ||

|| दोहा ||

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान | कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान ||

|| चौपाई ||

जय गिरिजा पति दीन दयाला | सदा करत सन्तन प्रतिपाला ||
भाल चंद्रमा सोहत नीके | कानन कुण्डल नागफनी के ||
अंग गौर शिर गंग बहाये | मुंडमाल तन क्षार लगाए ||
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे | छवि को देखि नाग मन मोहे ||
मैना मातु की ह्वै दुलारी | बाम अंग सोहत छवि न्यारी ||
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी | करत सदा शत्रुन क्षयकारी ||
नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे | सागर मध्य कमल हैं जैसे ||
कार्तिक श्याम और गणराऊ | या छवि को कहि जात न काऊ ||
देवन जबहीं जाय पुकारा | तब ही दुख प्रभु आप निवारा ||
किया उपद्रव तारक भारी | देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ||

तुरत षडानन आप पठायउ | लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ||
आप जलंधर असुर संहारा | सुयश तुम्हार विदित संसारा ||
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई | सबहिं कृपा कर लीन बचाई ||
किया तपहिं भागीरथ भारी | पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ||
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं | सेवक स्तुति करत सदाहीं ||
वेद माहि महिमा तुम गाई | अकथ अनादि भेद नहिं पाई ||
प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला | जरत सुरासुर भए विहाला ||
कीन्ही दया तहं करी सहाई | नीलकंठ तब नाम कहाई ||

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा | जीत के लंक विभीषण दीन्हा ||
सहस कमल में हो रहे धारी | कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ||

एक कमल प्रभु राखेउ जोई | कमल नयन पूजन चहं सोई ||
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर | भए प्रसन्न दिए इच्छित वर ||
जय जय जय अनन्त अविनाशी | करत कृपा सब के घटवासी ||
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै | भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै ||
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो | येहि अवसर मोहि आन उबारो ||
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो | संकट से मोहि आन उबारो ||
मात-पिता भ्राता सब होई | संकट में पूछत नहिं कोई ||
स्वामी एक है आस तुम्हारी | आय हरहु मम संकट भारी ||
धन निर्धन को देत सदा हीं | जो कोई जांचे सो फल पाहीं ||
अस्तुति केहि विधि करैं तुम्हारी | क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ||

शंकर हो संकट के नाशन | मंगल कारण विघ्न विनाशन ||
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं | शारद नारद शीश नवावैं ||
नमो नमो जय नमः शिवाय | सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ||
जो यह पाठ करे मन लाई | ता पर होत है शंभु सहाई ||
ऋनियां जो कोई हो अधिकारी | पाठ करे सो पावन हारी ||
पुत्र होन कर इच्छा जोई | निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ||
पंडित त्रयोदशी को लावे | ध्यान पूर्वक होम करावे ||
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा | ताके तन नहीं रहै कलेशा ||
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे | शंकर सम्मुख पाठ सुनावे ||
जन्म जन्म के पाप नसावे | अन्त धाम शिवपुर में पावे ||
कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी | जानि सकल दुःख हरहु हमारी ||

|| दोहा ||

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करौं चालीसा | तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो

जगदीश ||
मगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत चौसठ जान | अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण ||

www.hanumanchalisalyric.com